40

मसीही लोगों के लिए पवित्र आत्मा क्या करता है

(रोमियों 8)

रोमियों 8 अध्याय परमेश्वर के आत्मा के मसीही लोगों की सहायता करने पर बहुत कुछ कहता है। इस पर टिप्पणियां रोमियों 8 पर पाठों में बिखरी पड़ी हैं। आप इस विषय के मुज्य पहलुओं को इकट्ठा करके एक अध्ययन बना सकते हैं। अगली प्रस्तुति ऐसा करने का एक ढंग हो सकती है। कुछ सामग्री यह दिखाने के लिए कि सब विचारों को इकट्ठे किया जा सकता है, दोहराई गई है परन्तु यहां दिए गए मूल विचार अन्य पाठों से जोड़े जाने आवश्यक होंगे।

पवित्र आत्मा मसीही लोगों को किस प्रकार की सहायता देता है?

जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो परमेश्वर दान के रूप में हमें पवित्र आत्मा देता है (प्रेरितों 2:38; 5:32; देखें गलातियों 4:6)। इस दान का उद्देश्य, पहली कलीसिया में भी मसीही लोगों को आश्चर्यकर्म करने के योग्य बनाना नहीं था। (सब मसीही लोगों के पास यह दान था, परन्तु सब आश्चर्यकर्म नहीं कर सकते थे।) इस दान का उद्देश्य *ज़्या* था। पवित्र आत्मा मसीही लोगों के रूप में आज हमारे लिए ज़्या करता है।

मसीही व्यज़्ति के पास ऐसा कुछ है, जो बाहरी पापी के पास नहीं है।[1] पवित्र आत्मा मसीही व्यज़्ति के लिए *सब कुछ* तो नहीं करता, परन्तु *कुछ* अवश्य करता है। फिलिप्पियों 1:19 में पौलुस ने "आत्मा के प्रबन्ध" की बात की। अनुवादित शज़्द "प्रबन्ध" का अर्थ *"भरपूर उपाय"* है। परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा हमारे लिए भरपूरी से उपाय किया है।

परमेश्वर की संतान के जीवनों में पवित्र आत्मा के काम पर रोमियों 8 एक महत्वपूर्ण वचन है। यह अध्याय पवित्र आत्मा का उल्लेख लगभग बीस बार करता है। आइए यह जानने के लिए कि पवित्र आत्मा मसीही लोगों के लिए ज़्या करता है रोमियों 8 की समीक्षा करते हैं।

जीवन पर विजय (8:1-10)

आयत 1 का "सो" इसे अध्याय 7 से जोड़ता है, जिसने मानवीय आत्मा की पराजय की बात की (देखें 7:15, 18, 19, 24)। परन्तु अब एक नये तत्व अर्थात परमेश्वर का आत्मा जोड़ दिया है (8:1, 2, 4, 5, 9)। आत्मा के द्वारा हम पराजय के बजाय विजय पा सकते हैं।

मृत्यु पर विजय (8:11)

मसीह परमेश्वर की सामर्थ से मरे हुओं में से जी उठा था। वैसे ही आत्मा के द्वारा जो हमारे अन्दर वास करता है, हम जी उठेंगे। ज़्योंकि सब लोग जिलाए जाएंगे, चाहे बुरे हों या अच्छे

(यूहन्ना 5:28, 29), इसलिए रोमियों 8:11 अवश्य ही *अनन्त जीवन* के लिए जी उठने की बात करता है।

परीक्षा पर विजय (8:13)

अध्याय 7 में पौलुस ने पूछा, "मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (आयत 24)। अध्याय 8 में उसने कहा कि आत्मा के द्वारा हम शरीर के कामों को मार सकते हैं (आयत 13)। कहीं और पौलुस ने कहा कि हम आत्मा के द्वारा भीतरी मनुष्य में मज़बूत होते हैं (इफिसियों 3:16; देखें आयत 20)। मैंने कई लोगों को कहते सुना है, "जैसे ही मैं मसीही जीवन जी सकूंगा, मैं मसीही बन जाऊंगा; मैं बपतिस्मा ले लूंगा।" इस बात को समझें कि बिना मसीही अर्थात परमेश्वर की संतान बने जिसे परमेश्वर के आत्मा से सहायता मिलती है, आप मसीही जीवन नहीं जी सकते।

अनिर्णय पर विजय (8:14क)

पूरी बाइबल में परमेश्वर के अपने लोगों की "अगुआई" करने की बात कही गई है। रोमियों 8:14 पवित्र आत्मा के मसीही लोगों की अगुआई करने की बात कहता है। चरम स्थितियों से बचना आवश्यक है। पहली स्थिति उन लोगों की है जो दावा करते हैं कि उनके द्वारा लिए जाने वाले हर निर्णय का जिम्मेदार पवित्र आत्मा होता है। दूसरी उन मसीही लोगों की है, जो इनकार करते हैं कि पवित्र आत्मा *किसी तरह* उन्हें प्रभावित करता है। पवित्र आत्मा कई प्रकार से हमारी अगुआई कर सकता है। सबसे सुनिश्चित (और सबसे निराला) ढंग उस वचन के द्वारा है, जिसकी उसने प्रेरणा दी है (इफिसियों 6:17)। अन्य सद्भावनाओं में "द्वार खुलने" (देखें 1 कुरिन्थियों 16:9) जैसे ईश्वरीय प्रबन्ध (रोमियों 8:28) आते हैं। वह हमारी अगुआई हमारे विवेकों या परमेश्वर का भय रखने वाले मित्रों के परामर्श से भी कर सकता है। वह "ढंग" के विषय में स्पष्ट नहीं हो सकता। हमारे लिए महत्वपूर्ण बात यह समझना है कि परमेश्वर हमारे जीवनों में काम कर रहा *है* (देखें भजन संहिता 37:23)।

अनिश्चितता पर विजय (8:14ख-17, 23)

यह तथ्य कि बपतिस्मा लेने के समय परमेश्वर ने हमें अपना आत्मा दिया इतना ज़बर्दस्त प्रमाण है कि हम परमेश्वर की संतान हैं और उसके वारिस होने की सब आशिषें हमें मिली हैं। आयत 23 कहती है कि हमारे पास "आत्मा का पहिला फल" है। उपज के पहले फल शेष उपज की गारंटी होते थे। "पहले फल" का अर्थ मुख्यतया इफिसियों 1:13, 14 और 2 कुरिन्थियों 1:21, 22; 5:5 में "छाप" की तरह ही है। पवित्र आत्मा स्वर्ग की हमारी "गारंटी" है। रोमियों 8:16 कहता है, "आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।" यह देखने पर कि परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा हमारे लिए ज़्या करता है, हम आश्वस्त होते हैं कि वह हम से प्रेम रखता है और यह कि हम उसकी संतान हैं। इससे हमें दिलेरी मिलनी चाहिए!

निर्बलता पर विजय (8:26, 27)

हम सब कई बार अपने आपको कमज़ोर महसूस करते हैं। पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरियों में हमारी सहायता करता है। ''सहायता करता है'' शज़्द उस मिश्रित शज़्द से लिया गया है जिसका अर्थ ''विपरीत'' दिशा में ''साथ लेना'' है। बोझिल वस्तु को जो एक व्यज़्ति के लिए बहुत ही भारी है, उठाने की कोशिश करने की कल्पना करें। फिर दूसरी ओर से किसी के पकड़ने और आपके साथ उठाने की कल्पना करें। जीवन की आपकी चुनौतियों के सज़्बन्ध में, वह कोई और पवित्र आत्मा है, जो आपको वह करने में सहायता करता है जो आप अकेले नहीं कर सकते। आयत 26 पवित्र आत्मा के हमारी सहायता करने का एक विशेष उदाहरण देती है कि वह प्रार्थना में हमारी सहायता करता है।

सारांश

ज़्या पवित्र आत्मा के हमारे जीवनों में काम करने से पहले हमें उसके बारे में सब कुछ समझना आवयश्क है? नहीं। हमारे जीवनों में आत्मा का मुज़्य कार्य हमारे लिए ''आत्मा के अनुसार चलना'' है (आयत 4)। हमें नये नियम में हमारे लिए दिए गए आत्मा के निर्देशों को मानने की आवश्यकता है। ज़्या आप में पवित्र आत्मा वास करता है? यदि नहीं तो आप यीशु के नहीं हैं (आयत 9) यानी आपको बपतिस्मा लेकर इस अद्‌भुत दान को पाने की आवश्यकता है!

टिप्पणी

[1]इस बात पर ज़ोर दें कि बाइबल किसी बाहरी पापी (जो कभी मसीही नहीं बना) पर ''आत्मा के सीधे कार्य'' की शिक्षा *नहीं* देती।